उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद

U.P. Council of Agricultural Research

अष्टम तल, किसान मण्डी भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226 010

8th Floor, Kisan Mandi Bhawan, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226010

पत्रांक: 312 /एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनॉक: 13.06.2024

दिनांक	:	13 जून, 2024
समय	:	12:00 बजे
स्थान	:	उपकार सभाकक्ष
उपस्थिति	:	संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की वर्ष 2024–25 की षष्ठम् बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियॉं

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2024–25 की षष्ठम् बैठक डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 13 जून, 2024 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक; कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक व उद्यान विभाग; गन्ना विभाग; कृषि विभाग; प्रबंधक कृषि, सी.एस.सी.ई गवर्नेस सर्विसेज इंडिया लिमिटेड, लखनऊ के प्रतिनिधि तथा परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया। उक्त के अतिरिक्त बैठक में राहत आयुक्त के प्रतिनिधि; बांदा, कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा के मौसम वैज्ञानिक व कीट वैज्ञानिक; शुआट्स प्रयागराज के मौसम वैज्ञानिक; सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, मेरठ के मौसम वैज्ञानिक द्वारा ऑनलाइन प्रतिभाग किया गया।

मानसून 2024 की प्रगति

- दक्षिण पश्चिम मानसून की उत्तरी सीमा अरब सागर से गुजरात के नौसारी, महाराष्ट्र के जलगांव, अमरावती चन्द्रपुर बीजापुर, छत्तीसगढ़ के सुकमा, उड़ीसा के मलकानगिरी, आंध्र प्रदेश के विजयनगरम् से बंगाल की खाड़ी होते हुये पश्चिम बंगाल के इस्लामपुर तक आ रही है। 3
- आगामी 3–4 दिनों के दौरान महाराष्ट्र छत्तीसगढ़, उड़ीसा, तटीय आंध्र प्रदेश और उत्तरी पश्चिमी बंगाल की खाड़ी के कुछ और हिस्सों में मानसून की प्रगति के लिये परिस्थितियां अनुकूल हैं।

प्रथम सप्ताह (13 से 20 जून, 2024) का मौसम पूर्वानुमान

- भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार इस सप्ताह के आरंभिक चरण 13 से 15 जून, 2024 के दौरान प्रदेश के अधिकांश कृषि जलवायु अंचलों में मौसम मुख्तया शुष्क बने रहने की संभावना है। तदुपरांत 16 जून, 2024 से प्रदेश के उत्तरी पूर्वी मैदानी क्षेत्र के कुछ भागों से शुरू होकर सप्ताह के अंत तक प्रदेश के पूर्वी मैदानी क्षेत्र, मध्य मैदानी क्षेत्र, भांभर तराई क्षेत्र, विंध्य क्षेत्र एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र में कहीं–कहीं हल्की से मध्यम वर्षा होने जबकि बुंदेलखण्ड, दक्षिणी पश्चिमी अर्धशुष्क मैदानी क्षेत्र एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र में मौसम मुख्यतया शुष्क बने रहने की संभावना है।
- इस सप्ताह के दौरान प्रदेश के अधिकांश कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से अधिक रहने की संभावना है।
- प्रदेश के भावर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 38 से 40 डिग्री सेल्सियस; भाभर तराई क्षेत्र के पूर्वी भाग तथा पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग एवं उत्तरी पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 40 से 42 डिग्री सेल्सियस; दक्षिणी पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र एवं बुन्देलखण्ड क्षेत्र के अधिकांश भाग एवं मध्य मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 44 से 46 डिग्री सेल्सियस से जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 42–44 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। यद्यपि सप्ताह के आरंभिक चरण (13 से 16 जून, 2024) के दौरान कुछ स्थानों पर यह उक्त सीमा से अधिक हो सकता है।
- इस सप्ताह के आरंभिक चरण (13 से 15 जून, 2024) के दौरान प्रदेश के दक्षिणी पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र एवं बुन्देलखण्ड क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा मध्य मैदानी क्षेत्र में कुछ स्थानों पर लू से भीषण लू जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में लू चलने की संभावना है। तदुपरांत 16 जून, 2024 से प्रदेश के उत्तरी पूर्वी मैदानी

क्षेत्र, भाभर तराई क्षेत्र तथा पश्चिमी मैदानी क्षेत्र, मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र एवं मध्य मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग को छोड़कर प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में लू की परिस्थितियां जारी रहने की संभावना है।

प्रदेश में मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को अगले दो सप्ताह हेतु कृषि प्रबन्धन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:-

- जिन कृषकों ने धान की अधिक अवधि की किस्मों की नर्सरी अभी तक नहीं डाली है वो पूर्वी उत्तर प्रदेश में सांडा विधि से रोपाई करने हेतु अभी भी नर्सरी डाल सकते हैं।
- मानसून की वर्तमान दशा तथा अधिक तापमान के दृष्टिगत किसान भाई खरीफ फसलों की बुवाई तथा धान की नर्सरी 20 जून के बाद ही डालें।
- यदि अभी तक धान की नर्सरी न डाली गई हो तो मध्यम अवधि (120 से 130 दिन) व कम अवधि (105 से 120 दिन) की प्रजातियों की नर्सरी क्रमशः डालें।
- खरीफ फसलों की बुवाई हेतु शोधित बीज का ही प्रयोग करें। यदि बीज शोधित नहीं है तो उसे शोधित करके ही बुवाई करें।
- धान की नर्सरी अलग-अलग समयावधि के अन्तराल पर डालें ताकि मौसम की अनिश्चितताओं से बचा जा सके।
- किसान भाई धान की कम अवधि की प्रजातियों की सीधी बुवाई कर सकते हैं।
- नर्सरी में पानी का तापमान बढ़ने पर क्यारी से दोपहर के पहले पानी निकाल कर सायंकाल पुनः सिंचाई करें।
- मौसम तथा तापमान अनुकूल होने पर अरहर का अधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु रिज और मेड़ बनाकर मेड़ों पर बुआई करें।
- तैयार उर्द एवं मूंग की फलियों की तुड़ाई यथाशीघ्र करें।
- सरकार की प्राथमिकताओं के दृष्टिगत मोटा अनाज जैसे मक्का, ज्वार, बाजरा, रागी, सावां, कोदों आदि की खेती को महत्ता दी जाय। इन फसलों की खेती से मौसम के कुप्रभाव से भी बचाव किया जा सकता है।

धान की खेती

- 20-25 दिन वाली पौध की रोपाई 2-3 पौधा प्रति हिल 3-4 सेमी. की गहराई तक करें।
- धान की कम अवधि की उन्नत किस्मों सी.ओ.-51, नरेन्द्र-80, मनहर, आई.आर.-50, नरेन्द्र-97, पन्त धान-12, बारानी दीप, शुष्क सम्राट, नरेन्द्र लालमती, मालवीय धान-2, मालवीय धान-917, शियाट्स धान-5, नरेन्द्र-1, नरेन्द्र-2 तथा मध्यम अवधि की किस्मों नरेन्द्र-359, पंत धान-10, मालवीय धान-1, एन.डी. आर.-9930111, सीता, सरजू-52, पंत धान-4, शियाट्स धान-1, शियाट्स धान-2, शियाट्स धान-4, आई.आर.-64 सब-1, नरेन्द्र धान-2065, नरेन्द्र धान-3112-1, मालवीय धान-36 की नर्सरी डालें।
- सुगन्धित धान की किस्मों यथा नरेन्द्र लालमती, पूसा-1637, एच.यू.आर.-1309, कस्तूरी, पूसा बासमती-1509 की नर्सरी डालें।
- ऊसर क्षेत्रों हेतु धान की मध्यम अवधि की किस्मों सी.एस.आर.-10, सी.एस.आर.-43, सी.एस.आर.-13, नरेन्द्र ऊसर धान-2009, सी.एस.आर.-60 की नर्सरी डालें।
- नर्सरी में जिंक की कमी के कारण खैरा रोग दिखाई देता है। इस रोग में पत्तियाँ पीली पड़ जाती हैं जिस पर बाद में कत्थई रंग के धब्बे बन जाते हैं। खैरा रोग के नियन्त्रण हेतु 5 किग्रा. जिंक सल्फेट को 2 प्रतिशत यूरिया के घोल के साथ अथवा 2.50 किग्रा. बुझे हुए चूने को प्रति हे. लगभग 1000 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- नर्सरी में सफेदा रोग लौह तत्व की कमी के कारण लगता है। इस रोग में नई पत्ती कागज के समान सफेद रंग की निकलती है। सफेदा रोग के नियन्त्रण हेतु 5 किग्रा. फेरस सल्फेट को 2 प्रतिशत यूरिया के घोल अथवा 2.50 किग्रा. बुझे हुए चूने को प्रति हे. लगभग 1000 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।

- नर्सरी डालने के लिए शोधित बीज का ही प्रयोग करें। यदि बीज पूर्व शोधित न हो तो धान की नर्सरी डालने से पूर्व बीज शोधन सुनिश्चित करें। यदि जीवाणु झुलसा या जीवाणुधारी रोग की समस्या हो तो 25 किग्रा0 बीज के लिए स्टेप्टोमाइसीन सल्फेट 90 प्रतिशत एवं टेट्रासाइक्लिन हाइड्रोक्लोराइड 10 प्रतिशत की 4 ग्राम मात्रा को 100 ली. पानी में मिलाकर रात भर भिगो दें। दूसरे दिन छाया में सुखाकर नर्सरी डालें।
- बीज गलन, झोंका, शीथ ब्लाइट, भूरा धब्बा तथा मिथ्या कण्डुआ रोग से बचाव हेतु 2.50 ग्रा. थीरम 75 प्रतिशत डब्लू.एस. अथवा कार्बेण्डाजिम 50 प्रतिशत डब्लू. पी. की 2 ग्रा. अथवा थीरम 75 प्रतिशत डब्लू.एस. + कार्बेण्डाजिम 50 प्रतिशत डब्लू.पी. 2 ग्रा. अथवा यथा संभव ट्राईकोडर्मा, 4 से 5 ग्रा. प्रति किग्रा. बीज की दर से बीजशोधन करें।

मक्का की खेती

- देर से पकने वाले मक्के की बुआई यथाशीघ्र समाप्त करें।
- मध्यम अवधि की संकर किस्मों यथा–दकन–107, मालवीय संकर मक्का–2, प्रो–303 (3461), के.एच.–9451, के.एच.–510, एम.एम.एच.–69, बायो–9637, बायो–9682, एल.जी.–32–81, सी.ओ.एच.(एम) 8 एवं संकुल किस्मों नवजोत, पूसा कम्पोजिट–2, श्वेता सफेद, नवीन की बुवाई करें।
- यदि बीज शोधित न हो तो बीज बोने से पूर्व, पहले 1 किग्रा0 बीज को 2.5 ग्रा. थीरम या 2 ग्राम कार्बोन्डाजिम 50 डब्लू.पी. से शोधित करना चाहिये तथा बाद में बीज को इमिडाक्लोप्रिड 2 ग्रा./किग्रा. से बीज को शोधित करना चाहिए।
- मक्के में फाल आर्मी वर्म का प्रकोप होने पर 10 से 20 प्रतिशत क्षति की अवस्था में प्रभावी नियंत्रण हेतु क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल 18.5 प्रतिशत एस.सी. 0.4 मिली. प्रति लीटर पानी अथवा स्पाइनोसैड 0.3 मिली. प्रति लीटर पानी अथवा थायामेथाक्सॉम 12.6 प्रतिशत+लैम्ब्डासाइहैलोथ्रिन 9.5 प्रतिशत 0.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिये।

श्री अन्न की खेती

- सावां की संस्तुत प्रजातियों यथा आई.पी.–149, यू.पी.टी.–8, आई.पी.एम.–97, आई.पी.एम.–100, आई.पी. एम.–148 व आई.पी.एम.–151 की बुआई उचित नमी तथा उचित तापमान पर करें।
- कोदों की संस्तुत प्रजातियों जे.के.–6, जे.के.–62, जे.के.–2, ए.पी.के.–1, जी.पी.वी.के.–3 की बुआई उचित नमी तथा उचित तापमान पर करें।
- ज्वार की संस्तुत संकुल प्रजातियों यथा वर्षा, सी.एस.वी.–13, सी.एस.वी.–15, एस.पी.बी.–1388 (बुन्देला), विजेता तथा संकर प्रजातियों सी.एस.एच.–16, सी.एस.एच.–9, सी.एस.एच.–14, सी.एस.एच.–18, सी.एस. एच.–13 व सी.एस.एच.–23 के बीज की व्यवस्था करें। ताकि जून के अंतिम सप्ताह में बुवाई की जा सकें।

अरहर की खेती

- सिंचित क्षेत्रों में पश्चिमी उ.प्र. हेतु अरहर की अगेती संस्तुत किस्म पारस (पी.ए.–291), मध्य उत्तर प्रदेश हेतु पूसा अरहर–16, सम्पूर्ण उ.प्र. हेतु संस्तुत किस्मों यू.पी.ए.एस.–120, टा–21 तथा पूसा–992, पी.ए.–6 की बुवाई यथाशीघ्र समाप्त करें।
- बुआई से पूर्व यदि बीज शोधित न हो तो एक किग्रा. बीज को 2 ग्रा. थीरम, एक ग्राम कार्बेन्डाजिम अथवा 4 ग्राम ट्राईकोडर्मा + 1 ग्राम कारबाक्सिन से उपचारित करें। बुआई से पहले हर बीज को अरहर के विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें।

सोयाबीन की खेती

- सोयाबीन की सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश हेतु संस्तुत उन्नत किस्मों यथा पी.के. 472, पी.एस. 564, पी.के. 416, पी. एस. 1024, पूसा–16, पी.एस.1042, जे.एस. 20–34, जे. एस. 20–98, पंत सोयाबीन–26, जवाहर सोयाबीन 20–116, बुंदेलखण्ड हेतु संस्तुत जी.एस.–2, जे.एस.–93–5, जे.एस.–72–44, जे.एस.–75–46, पूसा–20, जे.एस.–335, एम.ए.यू.एस.–47, एन.आर.सी.–37 तथा तराई क्षेत्र तथा भांभर क्षेत्र हेतु संस्तुत पी.के.–262 की बुवाई 20 जून से करने हेतु बीज की व्यवस्था करें।

गन्ना की खेती

- माइट कीट का प्रकोप गन्ने में देखा जा रहा है इसके नियंत्रण हेतु 1 किलोग्राम सल्फर और 30 ग्राम चूना को 625 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हे. की दर से पत्तियों पर छिड़काव करें।

- पोक्का बोइंग रोग के नियंत्रण हेतु कॉपर आक्सीक्लोराइड 0.2 प्रतिशत अथवा कार्बेन्डाजिम 0.1 प्रतिशत का घोल बनाकर पत्तियों पर छिड़काव करें।
- चोटीबेधक कीट की तृतीय पीढ़ी जो गन्ना फसल हेतु अधिक हानिकर होती है, से बचाव हेतु क्लोरेन्ट्रोनिलीप्रोल 18.7 एस.सी. की 375 मि.ली. मात्रा को 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से गन्ने की लाईनों के पास डेचिंग करें।
- शरदकालीन बावग गन्ने में व्यांत की अवस्था पूर्ण हो चुकी है, अतः गन्ने को गिरने से बचाने एवं अवांछित कल्लों को निकलने से रोकने हेतु गन्ने की जड़ों पर मिट्टी अवश्य चढ़ा दें।
- खाली खेत जिसमें शरद कालीन गन्ने की बुवाई की जानी है, उसमें कार्बनिक पदार्थ की वृद्धि हेतु ढ़ैचा की बुवाई कर 45 से 50 दिन में खेत में पलट दें।
- अधिक तापमान के दृष्टिगत किसान भाई गन्ने में 15–20 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करते रहें।

सब्जियों की खेती

- कद्दूवर्गीय फसलों में यदि हरा फुदका एवं सफेद मक्खी कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. 1.0 मि.ली. रसायन एवं तना व फलछेदक कीट के नियंत्रण हेतु फ्लुबेन्डीमाइड 39.35 एस.सी. की 01 मि.ली. मात्रा को प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें तथा फल मक्खी से बचाने हेतु क्यू ल्योर फेरोमोन ट्रैप 8 से 10 ट्रैप प्रति हे. की दर से लगायें।
- मिर्च में पर्णकुंचन एवं मोजैक विषाणु रोग का प्रकोप अधिक होता है। इस रोग का प्रसार वाहक कीट सफेद मक्खी या हॉपर कीट के द्वारा होता है। इसके प्रसार की रोकथाम हेतु आवश्यकतानुसार इमिडाक्लोरोपिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. 1.0 दवा को प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 10 से 12 दिनों के अंतरातल पर छिड़काव करें तथा रोग ग्रसित पौधों को उखाड़कर जला दें अथवा मिट्टी में दबा दें।
- बैंगन की फसल को तना और फलबेधक कीट से बचाव के लिये क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल रसायन की 1.0 मिली. मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर 10–15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।
- भिण्डी की फसल में सफेद मक्खी के रोकथाम के लिये ग्रसित पौधें को उखाड़कर जला दे या मिट्टी में दबा दें तथा रोग वाहक कीट को नीला चिपचिपा ट्रैप 8 से 10 ट्रैप प्रति हे. लगायें। इसके रासायनिक उपचार में इमिडाक्लोप्रिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. 1.0 मि.ली. रसायन प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

बागवानी

- आम में बागों में निश्चित समय अंतराल पर सिंचाई कर नमी बनाये रखें।
- फलों के बाग के रोपण हेतु मई माह में गड्डों की भराई करने के लिये ऊपर की आधी मिट्टी में गोबर की सड़ी हुई खाद को मिलाकर जमीन की सतह से 15 से 20 से.मी. तक भराई कर लें।
- फल मक्खियों के नियंत्रण हेतु यौन गंध द्रव को बदलना चाहिये तथा एकत्रित मक्खियों को निकाल कर फेंक देना चाहिये।
- फलों की भण्डारण क्षमता बढ़ाने हेतु तुड़ाई पूर्व चौसा किस्म यथा अन्य देर से पकने वाले किस्मों के लिये 10 दिनों के अंतराल पर तीन छिड़काव डाइहाइड्रेटेड कैल्शियम क्लोराइड (221 ग्रा./10 ली.) का करना चाहिये।
- परिपक्वता आने पर प्रातः अथवा सायंकाल फलों की 8–10 मि.मी. डंठल सहित तुड़ाई की जानी चाहिये। फलों को प्रातः तथा अपराह्न तोड़ने से उन्हें फील्ड हीट (दोपहर की गर्मी) से बचा कर भण्डारण अवधि को बढ़ाया जा सकता है।
- आम को एकसार पकाने के लिये 750 पी.पी.एम. इथरल (1.8 मि.ली./ली.) गुनगुने पानी (52 ± 2^{0} सें.) के घोल में 5 मिनट तक डुबोकर तदुपरांत सायं में सुखाने के बाद भण्डारण करना चाहिये। इसी में (0.5 ग्रा./ली.) कोर्बेन्डाजिम या थायोफेनेट मिथाइल मिलाने से अन्य फफूंदी भी नष्ट हो जाती है और आम अच्छा पकता है।

पशुपालन

- पशुओं में ब्रुसेला एवं एफ.एम.डी. तथा एच.एस. का निःशुल्क टीकाकरण चल रहा है अतः पशुओं का टीकाकरण करायें।
- पशुओं को पर्याप्त मात्रा में साफ पानी पिलायें। दुहान से पहले पशुओं को सुबह शाम नहलायें और खरहरा करें, जिससे पशुओं में दूध उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़ें।
- पशुओं को लू से बचाने के लिये जूट के कट्टे या बोरे शेड के चारों ओर बांधकर पानी छिड़काव लगातार करते रहना चाहिये, जिससे पशुओं को लू से बचाया जा सकता है।

- वर्तमान में खरीफ चारा फसलों की बवुाई का समय नजदीक है। सभी पशुपालक/कृषक खेत की तैयारी करना शुरू कर दें तथा उन्नतशील किस्म के बीज की व्यवस्था कर समय से बुवाई करायें।
- मुर्गियों में उनके बाड़े का तापमान गर्मी में 18.26 डिग्री सेल्सियस होना चाहिये, जिसको घटाने के लिये उनके शेड की छत पर बोरा डालकर स्प्रिंकलर से आधे से एक घंटे में तराई करते रहना चाहिये।
- पुशुओं को धूप से बचने के लिये दोपहर में छायादार स्थान पर बांधे तथा सुबह एवं सायंकाल में ही चराई करायें।
- दोपहर के समय पशुओं को नहलाने एवं चराई से बचायें।
- पशुओं को हरा चारा अवश्य खिलायें, पशुओ को मुरझाया हुआ हरा चारा (विशेष रूप से ज्वार) न खिलायें क्योंकि इसमें एच.सी.एन. तत्व (जहरीली तत्व) की अधिकता से पशु बीमार हो सकते हैं।
- वर्तमान मौसम में तापमान अधिक होने के कारण पशुओं में डिहाइड्रेशन की समस्या हो सकती हैं। इससे बचाव हेतु पशुओं को खनिज–लवण मिक्चर खिलायें।

मत्स्य पालन

- तालाब निर्माण का उपयुक्त समय है जो किसान नये तालाब बनाना चाहते हों या अपने तालाब का सुधार कार्य कराना चाहते है वे 20 जून तक निर्माण कार्य पूरा करा लें तथा आगामी मौसम में मत्स्य पालन की तैयारी करें। इसके लिये मत्स्य विभाग से सम्पर्क करें।
- मत्स्य बीज उत्पादक अपने ब्रूड फिश को पूरक आहार शरीर भार के दो प्रतिशत की दर से प्रतिदिन खिलायें साथ ही साथ विटामिन–ई युक्त आहार भी दें।
- कतला, रोहू एवं नैन प्रजातियों में मेच्योरिटी आ गई है। तालाब का जलस्तर 5 से 6 फुट बनाये रखें। जिन मत्स्य बीज उत्पादकों ने अभी तक नर्सरियों को तैयार नही किया है वे शीघ्र नर्सरियों को तैयार कर लें।
- कतला, रोहू, नैन प्रजातियों का उत्प्रेरित प्रजनन का समय आ गया है। हैचरी स्वामी मानसून के आगमन संबंधी पूर्वानुमान पर विशेष ध्यान दें। 20 जून से कतला, रोहू, नैन मत्स्य प्रजातियों का उत्प्रेरित प्रजनन करायें। सिल्वर कार्प एवं ग्रास कार्प मत्स्य प्रजातियों का मत्स्य बीज वर्तमान में उ.प्र. मत्स्य विकास निगम व निजी क्षेत्र में उपलब्ध है अतःमत्स्य पालक जनपदीय कार्यालय से सम्पर्क कर मत्स्य बीज संचय करायें।
- थाई मॉगुर मछली पालना प्रतिबन्धित है। इसको न पाला जाये।

रेशम

- टसर बीजागारों में संरक्षित कोयों में प्यूपा को जीवित रखने के लिए ठण्ड बनाये रखें।
- सिंचित क्षेत्र में शहतूत पौधों की तथा शहतूत/अर्जुन की नर्सरी की नियमित सिंचाई करते रहें।
- असिंचित क्षेत्र में शहतूत/अर्जुन पौधों के चारों तरफ मिट्टी की गुड़ाई कर नमीं संरक्षित रखने का प्रयास करें।
- रेशम फार्मों की सुरक्षा हेतु बबूल की हेज तैयार करने हेतु फार्मों के चारों तरफ खाई में बबूल बीज की बुवाई करें।
- शहतूती रेशम फार्मों में ट्रीमिंग करके प्रूनिंग कार्य प्रारम्भ करें।
- नये क्षेत्र में वृक्षारोपण कराने हेतु मृदा कार्य पूर्ण कराया जाय।

वानिकी

- वृक्षारोपण हेतु गड्ढ़ों की खुदाई यथाशीघ्र पूर्ण करें।
- 10 से 15 कि.ग्रा. गोबर की सड़ी खाद मिट्टी में मिलाकर 2 से 3 से.मी. ऊंचाई तक गड्ढ़ों को भरें।
- बंसुरी विधि द्वारा बांस के रोपण का कार्य करें।
- वृक्षारोपण से पहले पौधों को नर्सरी से निकालकर 10 से 20 दिनों के लिये विश्राम अवधि में रखें।
- पौधों को छाया स्थान पर रखें तथा फुआरे विधि द्वारा हल्की सिंचाई करते रहे।
- नर्सरी से पौधों को पिण्डी सहित निकाल कर रखें।

- वृक्षारोपण हेतु आवश्यक पौधे प्राप्त कर लें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 20 जून, 2024 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः– क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट *upcar.up.gov.in* पर भी उपलब्ध है।

- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां किसान मित्र ए.आई. चैट बॉट www.kisanmitraup.ai पर भी उपलब्ध है। किसान भाई इस पर भी सवाल पूछ सकते हैं।

(संजय सिंह) 13/6/24
महानिदेशक

प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. स्टाफ ऑफीसर, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. अपर मुख्य सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र. को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेगें।
16. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ।
17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
20. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
21. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
22. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
23. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
24. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
25. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
26. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
28. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
29. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
30. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
31. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।

32. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
33. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक, उप कृषि निदेशक एवं जिला कृषि अधिकारी
43. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
44. प्रदेश के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्र
45. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
46. किसान मित्र चैट बॉट, कृषि समृद्धि टीम, कृषि विभाग, लखनऊ।
47. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
48. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

13-6-24

(विनोद कुमार तिवारी)
वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2024–25 की षष्ठम् बैठक दिनांक 13 जून, 2024 की उपस्थिति

1. डा. संजय सिह, महानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
2. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ
3. डा. विनोद कुमार तिवारी, वैज्ञानिक अधिकारी, एव सदस्य सचिव, उपकार, लखनऊ।
4. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ
5. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
6. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ
7. श्री कुंदन सिंह, पादप रक्षा विभाग, कृषि विभाग, लखनऊ।
8. श्री बाल कृष्ण, उद्यान भवन, सप्रू मार्ग लखनऊ।
9. श्री ओमकार सिंह त्यागी, प्रबंधक कृषि, सी.एस.सी.ई गवर्नेस सर्विसेज इंडिया लिमिटेड, विजय खण्ड गोमती नगर लखनऊ।
10. श्री नेत्रपाल यादव, उद्यान विशेषज्ञ, उद्यान भवन, सप्रू मार्ग लखनऊ।
11. डा. प्रवीन चरन, टेक्नीकल आफीसर, जी.के.एम.एस. परियोजना नैनी एग्रीकल्चर इंस्टीट्यूट, शुआट्स, प्रयागराज (ऑनलाइन)।
12. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या (ऑनलाइन)।
13. डा. यू.पी. शाही, प्राध्यापक मृदा विज्ञान एवं प्रधान अन्वेषक, ग्रामीण कृषि मौसम सेवा सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, मेरठ (जीकेएमएस) (ऑनलाइन)।
14. डा. दिनेश शाह, प्राध्यापक, शस्य विज्ञान एवं इंचार्ज, एग्रोमेट आबजरवेट्री, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
15. डा. सुरेन्द्र कुमार सिंह, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (कीट विज्ञान विभाग), बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
16. श्री अमर सिंह, संयुक्त गन्ना आयुक्त, गन्ना विभाग, उत्तर प्रदेश (ऑनलाइन)।